वाला मारा दिनडा आसोना आव्या, हांरे घेर मेघलियो बारे रे सिधाव्या।
हांरे वन वेलडिए रंग सोहाव्या,पिउजी तमे एणे समे वृजडी कां न आव्या।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ५ ।।

हे मेरे वालाजी! आसो (कुंवार) का महीना आया है तथा वर्षा वाले बादल सब अपने घर वापस चले गए हैं। अब वन और बेलें अधिक शोभा दे रही हैं। हे पियाजी! ऐसे समय में ब्रज में क्यों नहीं आए? इसलिए अब मैं पिया-पिया कहकर पुकारती हूं।

वाला मारा एक वार जुओ वनडू आवी, हां रे चांदलिए जोत चढावी।
वेलडिए वनस्पति रे सोहावी, एणे समे विरहणियो कां विलखावी।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ६ ।।

हे मेरे वालाजी! एक बार आकर इस वृन्दावन को देखो। चन्द्रमा की ज्योति से बेलों और वनस्पतियों की शोभा दोगुनी हो गई है। इस समय मुझ विरहिणी को क्यों रुला रहे हो? मैं तो आपके वियोग में तड़प रही हूं और पिया-पिया कहकर पुकारती हूं।

॥ प्रकरण ॥ १ ॥ चौपाई ॥ ६ ॥

॥ हेमंत रुत (कार्तिक-मगसर) ॥

राग मलार

वाला मारा हेमाले थी हेम रुत हाली, ए तो वेरण आवी रे विरहणियो ऊपर चाली।
वृजडी वीटी रे लीधी वचे घाली, पिउजी तमे हजिए कां बेठा आप झाली।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। १ ।।

हे मेरे पिया! बर्फ से ढके पर्वतों से ठण्डी हवा आ रही है। यह हवा विरहणियों को और जलाने आई है। इसने ब्रज को घेर रखा है। धनी! अब आप जिद करके क्यों बैठे हो? आते क्यों नहीं? मैं पिया-पिया कहकर पुकार रही हूं।

रे विरही तमे विरहणियो ने कां न संभारो, नंद कुंअर नेहडो छे जो तमारो।
वाला मारा दोष घणो रे अमारो, पिउजी तमे एणी विधे अमने कां मारो।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। २ ।।

हे बिछुड़े प्रीतम! तुम अपनी विरहणियों को क्यों याद नहीं करते? हे नन्द कुंवर! आपका भी तो हमसे प्यार है। वालाजी! मेरे अन्दर बहुत अवगुण हैं, परन्तु आप इस तरह से हमें क्यों मारते हो? हे श्याम! मैं तो पिया-पिया करके पुकारती हूं।

वाला मारा कारतकियो अंगडा कापे, नाहोलिया तारो नेहडो वाले मूने तापे।
वाला मूने गुण अंग इंद्रियो रे संतापे, पिउजी विना दुखडा ते सहु मूने आपे।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ३ ।।

हे मेरे वालाजी! कार्तिक मास की ठण्डी हवाओं से मेरा तन कांप रहा है। हे प्रीतम! आपका प्रेम मुझे जला रहा है। मेरा रोम-रोम मुझे दुःखी कर रहा है। जिससे पिया-पिया करके मैं पुकारती हूं।

वाला मारा टाढली ते सहुने वाय, हरि अम विरहणियोने अगिन न माय।
ऊपर टाढो वावलियो धमण धमाय, ए रुत मूने सूतडा सूल जगाय।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ४ ।।

हे वालाजी! यह हवा सबको ठण्डी लगती है, पर हम विरहणियों से वियोग की अग्नि सही नहीं जाती और ऊपर से ठण्डी हवा के झोंके धौंकनी की तरह विरह की अग्नि को और भी भड़का रहे हैं। यह ऋतु मेरे भूले दुःखों को याद कराती है।

वाला महिनो मागसरियो मदमातो, ते तो अमने मारसे रे जोनी जातो।
तारा विरहनी रेहेसे रे वेराट मां वातो, अम ऊपर एम कां नाखी निघातो।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ५ ।।

हे वालाजी! मस्ती से भरा मागसर (अगहन) का महीना आया है। यह तो हम विरहणियों को मार ही देगा। आपके विरह की बातें ही केवल संसार में रह जाएंगी। आपने हमें विरह की चोट पर चोट लगाकर अति दुःखी किया है, पर मैं तो फिर भी पिया-पिया की रट लगा रही हूं।

रे वाला मारा सियालो सुखणियो मागे, पिउजीना सुखडा मां सारी रात जागे।
वालाजीने विलसे रे वड भागे, अमने तो मंदिरियो मसांण थई लागे।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ६ ।।

हे मेरे प्रीतम! सुहागिन पलियां शरद ऋतु को मांगती हैं जिससे सारी रात प्रीतम के आनन्द में बीते। वह बड़ भागी हैं जो अपने पिया के साथ आनन्द लेती हैं। मुझे तो यह घर आपके बिना शमशान के समान लग रहा है। इसलिए मैं पिया-पिया करके पुकार कर रही हूं।

।। प्रकरण ।। २ ।। चौपाई ।। १२ ।।

।। सीत रुत ।।

राग मलार

वाला रुतडी आवी रे सीतलडी लूखी, वेलडियो वन जाय रे सर्वे सूकी।
वसेके वली वाले रे उतरियो फूकी, पिउजी तमे हजिए कां बेठा अमने मूकी।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। १ ।।

हे वालाजी खुश्क शीत ऋतु आई है। वन की बेलें और वन सब सूख गए हैं। खासकर उत्तर की हवाओं ने बेलों को जला दिया है। हे धनी! आप अभी तक मुझे क्यों छोड़कर बैठे हो? मैं तो पिया-पिया कहकर पुकारती हूं।

नाहोलिया निस्वासा धमण धमाय, हांरे मारा अंगडा मां अगिन न माय।
वाला तारी झालडियो केमे न झंपाय, पिउजी तारो एवडो स्यो कोप केहेवाय।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। २ ।।

हे धनी! मेरी सांस धौंकनी की तरह चल रही है। जिससे मेरे अंग में विरह की अग्नि समाती नहीं है। हे प्रीतम! आपके विरह की लपटें किसी तरह शान्त नहीं होती हैं। हे धनी! आपकी नाराजगी कैसी है? मैं तो पिया-पिया करके पुकार रही हूं।